कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

श्यामा प्रसाद की दिव्यात्मा,
अब पाएगी शान्ति ।
तीन सौ सत्तर हुई निष्प्रभा,
आएगी नव क्रांति ।।1।।

अखण्ड भारत की दिशा में,
कदम बढ़ा है विशेष ।
पाक-चीन के कब्जे से अब,
होगा मुक्त स्वदेश ।।2।।

कोढ़नुमा था 'पैंतिस ए' जो,
किया निरस्त उसे भी ।
भटके युवकों के हाथों ने,
छोड़ दिए पत्थर भी ।।3।।

कश्मीरी पंडित समाज का,
सोया भाग्य जगा है ।
जगन्मात का खोया आसन,
पाने की आशा है ।।4।।

जग-जननी का आसन पाना,
भारत की नियति है ।
मानवता की रक्षा के हित,
यह होना निश्चित है ।।5।।

- लक्ष्मीनारायण भाला 'लक्खीदा'

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 30, अंक 3
जुलाई-सितम्बर 2019 (विक्रम संवत् 2076)

–: सम्पादक :–
स्नेहलता बैद

–: सम्पादन सहयोग :–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता, डॉ. रंजना त्रिपाठी

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता - 7
दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
24/25, डबसन लेन, 1 तल्ला
हावड़ा - 1, दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–
विश्वनाथ बिस्वास

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata - 700007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata - 700005. Editor: Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- संपादकीय... 2
- पहचान भारत अपने आप में ... 3
- केशियारी गाँव में वृक्षारोपण ... 4
- TREE PLANTATION 4
- हावड़ा महानगर के कार्यक्रम 5
- कोलकाता महिला समिति ... 5
- हावड़ा महानगर की योजना बैठक... 5
- स्वावलम्बन योजना के बढ़ते चरण ... 6
- लेकटाऊन महिला समिति ... 6
- नैपुण्य शिविर का प्रेरक आयोजन ... 7
- बागमुण्डि में युवती चेतना शिविर ... 7
- भीलों/वनवासियों (हिन्दुओं) के ... 8
- छत्तीसगढ़ में वनवासियों ने... 9
- रक्षाबन्धन पर कल्याण आश्रम ... 10
- अनुकरणीय... 11
- वनवासियों को राखी बांधने ... 12
- प्रेरक प्रसंग... 13
- प्रसिद्ध उद्योगपति बसन्त कुमार ... 14
- रामगुलाम द्विवेदी का देहावसान ... 14
- शोक संवाद...
  - पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज... 15
  - पू.स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि... 15
  - अरुण जेटली पंचतत्व... 15
- बोधकथा : वास्तविक सेवा... 16
- कविता : आज तिरंगा झूम रहा है 16

संपादकीय...

भारत की अखण्डता पुनः प्रतिष्ठित हुई

भाजपा सरकार ने मंगलवार 5 अगस्त 2019 को ऐतिहासिक व साहसिक निर्णय लेते हुए जम्मू कश्मीर से धारा 370 हटाकर एक देश एक संविधान का सपना साकार कर दिया। एक नई युग की शुरूआत हुई जिसका निहितार्थ है कि देश एक है, नागरिकता एक है, झंडा एक है और किसी भी तरह की अराजकता को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। सही मायनों में देश अब आजाद हुआ है। इतिहास में 15 अगस्त भारत के स्वतंत्रता दिवस की तरह ही 5 अगस्त जम्मू कश्मीर की आजादी के लिए दर्ज हो गया है। लद्दाख को अलग केन्द्र शासित राज्य बनाया गया है। जम्मू कश्मीर दिल्ली और पोडीचेरी की तरह विधानसभा वाला केन्द्र शासित प्रदेश होगा। जम्मू कश्मीर से धारा 35ए समाप्त कर दी गई है। 35ए के कारण जम्मू कश्मीर की महिला के राज्य के बाहर शादी करने से वहां की नागरिकता समाप्त कर दी जाती थी। पाकिस्तान में शादी करने पर तो वहां पर महिला को नागरिकता मिल जाती थी।

अब तक देश में उपलब्ध कई अधिकारों से वहाँ के नागरिक वञ्चित थे। उनका अपना संविधान, अपना झण्डा था। हमारे उच्चतम न्यायालय के फैसले वहाँ लागू नहीं थे। केन्द्र सरकार ने दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय देते हुए इस अनुच्छेद को हटाकर जो फैसला लिया है वह सचमुच सराहनीय है। सही मायनों में आजादी आज ही मिली है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने धारा 370 के खिलाफ जो आन्दोलन किया और बलिदान दिया, आज उनका बलिदान सार्थक हुआ है। इस विधेयक का पारित होना सरदार बल्लभ भाई पटेल और बाबा साहब अम्बेडकर को सच्ची श्रद्धाञ्जलि है। पिछले 70 वर्षों से चल रही दोगलेपन की इस वातावरण की विदाई रंग लाएगी। आतंकवाद का मूल ही अनुच्छेद 370 था। इसकी आड़ में चंद लोगों ने लाखों लोगों को गरीबी का जीवन जीने को मजबूर कर रखा था। केन्द्र की सहायता भी आम आदमी तक नहीं पहुँची। 370 के कारण जम्मू कश्मीर में कभी भी लोकतंत्र प्रफुल्लित नहीं हुआ। इसके कारण भ्रष्टाचार फला फूला। इस कानून के कारण यह राज्य आरोग्य, शिक्षा सहित कई क्षेत्रों में पिछड़ गया। राज्य में आतंकवाद बढ़ा, अलगाववाद की भावना बढ़ी अब तक 41,400 लोग मारे गये। पूरी दुनिया मानती है कि कश्मीर घाटी और लद्दाख स्वर्ग है लेकिन पर्यटक बढ़ने चाहिए थे, वह नहीं हुआ। पर्यटन की अथाह संभावनाएं हैं लेकिन अच्छा होटल बनाने के लिए वहां कोई भूमि नहीं खरीद सकता। धारा 370 खत्म होने से बाहर के लोग निवेश करेंगे, रोजगार बढ़ेगा। जम्मू कश्मीर को दिए विशेष राज्य के दर्जे को खत्म किया जाना ऐतिहासिक भूल को सही करने वाला ऐतिहासिक कदम है। अब तिरंगा ही जम्मू-कश्मीर का राष्ट्रीय ध्वज होगा। आरटीआई और सीएजी कानून लागू होंगे। विधानसभा की अवधि 6 साल की बजाय 5 साल की होगी। राष्ट्रध्वज या राष्ट्रीय प्रतीकों का अपमान अब अपराध माना जाएगा। सुप्रीम कोर्ट के आदेश अब राज्य में लागू होंगे। निश्चय ही राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाने की दिशा में यह साहसिक कदम है। विकास का एक नया वातावरण तैयार होगा। यह मजबूत फैसला भारत के लोकतंत्र को और मजबूत करे, इसकी कोशिश हम सब मिलकर करें। इति शुभम् ❑

-स्नेहलता बैद

संस्मरण

पहचान भारत अपने आप में

- अतुल जोग, अ.भा.संगठन मंत्री

मेरे एक मित्र श्री जी थोंग कोहिमा में रहते हैं । वह रेंगमा नागा जनजाति के हैं। वे सरकारी नौकरी में हैं। एक बार वो विदेश गये हुए थे। अपना टूर पूरा करके थाईलैण्ड से वापस भारत लौटने वाले थे। अपनी विमान यात्रा हेतु वे थाईलैण्ड के हवाई अड्डे पर गए। वहाँ के अधिकारियों ने विमान का टिकट और पासपोर्ट मांगा, उन्होंने दिया। अधिकारी ने नाम पढ़ा - जी थोंग और राष्ट्रीयता भारतीय। अधिकारी बार-बार राष्ट्रीयता पढ़ रहा था और चेहरा देख रहा था। उसे विश्वास नहीं हो रहा था। चेहरा तो भारतीय नहीं लग रहा है। अधिकारी ने पूछा और कोई पहचान पत्र ? मित्र ने अपना पहचान पत्र देकर कहा कि मैं नागालैण्ड की राज्य सरकार में अधिकारी हूँ। फिर भी थाई महिला अधिकारी को विश्वास नहीं हो रहा था। वह ठीक से अंग्रेजी नहीं बोल पा रही थी और मित्र को थाई भाषा मालूम नहीं थी। अधिकारी पूछताछ कर रही थी लेकिन दिखने वाला चेहरा और पहचानपत्र पर लिखी राष्ट्रीयता उसकी समझ से मेल नहीं खा रहे थे। और हमारे मित्र को रोक दिया गया। इतने में एक भारतीय प्रवासी वहाँ आया। थाई अधिकारी ने उसे नागा व्यक्ति की तरफ इशारा करते हुए पूछा क्या यह व्यक्ति भारतीय है? उसने चेहरा देखकर अज्ञानतावश तुरन्त बताया नहीं-नहीं, वह भारतीय नहीं है। थाई अधिकारी को पूरा विश्वास हो गया कि भारतीय व्यक्ति भी जब नकार रहा है तो इसे रोक कर हमने ठीक ही किया है। और थोंग साहब को पुलिस ने यात्रा की अनुमति नहीं दी और रोक दिया।

थोंग साहब चिंता में पड़ गये। अब क्या करें कि जिससे थाई पुलिस विश्वास कर ले। प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति का नाम बताऊँ तो यहाँ के लोग उनके नाम जानते होंगे ऐसा आवश्यक नहीं, तो भारत की पहचान क्या है ? वो सोचने लगे, सोचने लगे और दोनो हाथ उठाकर जोर से चिल्लाए I am the Himalaya. मैं हिमालय हूँ। थाई पुलिस अधिकारी हंसकर बोले अच्छा तो आप भारतीय हैं। ओके-ओके चलो इन्हें छोड़ दो।

भारत की पहचान दुनिया में कोई व्यक्ति नहीं है, भारत अपने आप में एक पहचान है। भारत जमीन का टुकड़ा मात्र नहीं है। भारत में देवतात्मा हिमालय है। भारत में हर नदी लोकमाता है। भारत अकेला देश है जिसे भारत माता कहते हैं। ❑

अमृत वचन

- इस विश्व में स्वर्ण, गाय और पृथ्वी का दान देने वाले सुलभ हैं लेकिन प्राणियों को अभय दान देने वाल इंसान दुर्लभ है। *-भर्तृहरि*
- सच्चा प्रेम नाप-तौल नहीं करता, वह सिर्फ दिया जाता है। *- मदर टेरेसा*
- लोग आजादी भोग रहे हैं वे अच्छी तरह समझ सकते हैं कि जो लोग स्वतंत्र नहीं हैं उनके लिए स्वतंत्रता की आशा करना कितना सुखदायी है। *- पर्ल एस बक*
- मतभेद भुलाकर किसी विशिष्ट काम के लिए सारे पक्षों का एक हो जाना जिंदा राष्ट्र का लक्षण है *- लोकमान्य तिलक*

केशियारी गाँव में वृक्षारोपण का आयोजन

- अमिता बंका, संयोजिका दक्षिण महिला समिति

15 जुलाई 2019 अलीपुर समिति के लिए बहुत ही उत्साहवर्धक और आनंददायक दिन था, क्योंकि हम केशियारी गाँव में आयोजित हो रहे वृक्षारोपण कार्यक्रम में भाग लेने जा रहे थे।

प्रात:7 बजे हमारी बस मारवाड़ बैन्क्वेट अलीपुर से समिति की लगभग 15 महिलाओं को लेकर रवाना हुई। बस की रफ्तार के बढ़ने के साथ-साथ हम महिलाओं का उमंग और जोश भी पेंगे भरने लगा था। हर दिल की यही तमन्ना थी कब हम केशियारी गाँव पहुँचे और उस पवित्र भूमि को पौधों की कतारों से भर दें। रास्ते में नाश्ते और हँसी मजाक के साथ–साथ हमारी बस भी हँसती-कूदती आखिर केशियारी गाँव पहुँच ही गई। तपती धूप और काले बादलों की आँख-मिचौली के खेल में सेल्फ हेल्प ग्रुप के सदस्यों के साथ हम अपने लक्ष्य वृक्षारोपण के लिए बेताब थे। गाँव के सदस्यों ने हमारे साथ सबसे पहले पौधों की पूजा की। इसके बाद सब निकल पड़े अपने-अपने पौधों को लगाने के लिए । रत्नगर्भा वसुन्धरा की गोद को हरे–भरे पौधों से सजाने के लिए। लगभग 150 पौधों को लगाने का लक्ष्य पूरा करके, गाँववालों से अनुमति लेकर हम वापस चलने को तैयार हुए। इसी बीच हमने गोबर गैस प्लांट भी देखा और यह भी जाना कि यह तकनीक प्रदूषण रहित होने के साथ-साथ ग्रामीण जीवन के रहन–सहन के स्तर को भी उँचा बनाए रखने में भी सहायक सिद्ध हो रही है। अभी तक सिर्फ पढ़ा भर ही था लेकिन यहाँ आकर जाना ग्रामीण जीवन की सरलता और सहजता के बारे में। बस रवाना हुई कल्याण आश्रम की ओर, जहाँ हमें दोपहर का भोजन करना था। पहुँचते ही वहाँ की हरियाली, गोवंश-कतारें और सेवा–भाव की पराकाष्ठा देखकर मन भर आया। भोजन मंत्र के साथ हमने सुस्वादु भोजन ग्रहण किया। समूह चित्र लिया। स्मृतियों को सँजोए चल पड़े अपने कोलकाता की ओर। बस के अंदर हमने तरह-तरह के गेम खेले। कोलाघाट में वर्षा की रिमझिम फुहारों ने हमारे तन-मन को पूरा भिगो दिया, और जो कसर बची उसे गरमागरम चाय ने पूरा कर दिया। लगभग सायं 6 बजे तक हम सभी अपने शहर कोलकाता पहुँच गए इस उम्मीद के साथ कि बार–बार ये दिन आए। ❑

TREE PLANTATION AT JYOTISHPUR BY YUVA SAMITY

- Devyani Kothari

In one word, the experience for me was very "uplifting". Uplifting in terms of experiencing pure sense of humanity, humbleness and an innate instinct to care for mankind. The day started with an unknown group getting together for a common cause. However, first timers like me, probably had no idea what was in store for us. Right from the start go, each of us felt welcomed by the volunteers. Their warm smiles and responsiveness towards us, put us at ease with each other and together we enjoyed our journey forward. The experience at the village was really heartening. We were greeted so warmly by every one we met there. Forming smaller teams, we set out on our mission to plant saplings in the yards of the huts. Being able to do something for them, even though a small effort, gave me immense happiness. The afternoon meal cooked and served with much love and care was simply delicious and we ate to our heart's content. Every little thing was taken care of and arranged very well. Before this day, I had only read about rural living. That day gave me a chance to observe it more closely and left a profound mark inside. I would sincerely like to thank Purvanchal Kalyan Ashram for giving me this opportunity to be a part of this program. ❑

हावड़ा महानगर के कार्यक्रम

- कुसुम सरावगी, हावड़ा महानगर महिला प्रमुख

पुरुलिया एवं अयोध्या पहाड़ की वनयात्रा

हावड़ा के 9 पुरुष-महिला कार्यकर्ता अयोध्या पहाड़ में भगवान राम एवं सीताकुण्ड के दर्शन कर लौटते समय **गरबारी लोहार** से मिले जहाँ से कल्याण आश्रम का प्रारंभिक कार्य शुरू हुआ। गरबारी दिव्यांग है पर प्रारंभ से ही कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं की देखभाल करती है। आश्रम के प्रति उसका सद्भाव देखकर मन आदर से भर गया एवं लगा कि यह दिव्यांग महिला सही अर्थों में दिव्य कार्य से जुड़ी है। वहाँ सिलाई केन्द्र भी देखा एवं शिशु शिक्षा केन्द्र के बच्चों से मिले। ❑

मंगल पाठ का आयोजन

उत्तर हावड़ा महिला समिति द्वारा गत् 17 अगस्त को लिलुआ के अग्रसेन भवन में श्री राणी सती दादी का मंगल पाठ आयोजित किया गया। भारी बारिश के बावजूद 200 महिलायें भाव-भक्तिपूर्वक पाठ में सम्मिलित हुई।

सिंधारा उत्सव

उत्तर हावड़ा महिला समिति ने गत् 20 जुलाई को कृष्ण भवन के प्राङ्गण में सिंधारा उत्सव मनाया जिसमें शताधिक बहनों ने भाग लिया। ❑

कोलकाता महिला समिति का सिंधारा उत्सव

- शीला सराफ, सहसंयोजिका कुम्हारटोली महिला समिति

पूर्वांचल कल्याण आश्रम द्वारा आयोजित सिंधारा उत्सव 31 जुलाई 2019 को साल्टलेक स्थित 'मेवाड़ बैंक्वेट' में किया गया। इस आयोजन का दायित्व कुम्हारटोली समिति की बहनों पर था। लगभग 261 महिलाओं की उपस्थिति थी। इस बार पूरा कार्यक्रम पंजाबी थीम पर आधारित था। सभी समितियों की बहनों ने पंजाबी थीम पर नृत्य और नाटिका की प्रस्तुति दी। साथ-साथ में प्रश्नोत्तरी का भी कार्यक्रम था। ऐसा लग रहा था कि पूरा पंजाब यहीं सिमट गया हो। पंजाबी वेशभूषा से सुसज्जित सभी कार्यकर्ता बहनों एवं मेहमानों ने इस कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिये। संचालन श्रीमती शीला सराफ एवं श्रीमती आशा धूत ने किया। ❑

प्रसन्न मुद्रा में कुम्हारटोली समिति की बहनें

हावड़ा महानगर की योजना बैठक

- शर्मिला अग्रवाल, संयोजिका उत्तर हावड़ा समिति

हावड़ा महानगर की वार्षिक योजना बैठक 9 जून 2019 को सम्पन्न हुई जिसमें 41 पुरुष एवं 20 महिलाओं की उपस्थिति रही। हावड़ा महानगर एवं सभी समितियों के गत वर्ष के कार्य का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया एवं आगामी वर्ष के लिए लक्ष्य निर्धारित किए गए। गौ सेवा से जुड़े ललित अग्रवाल गौ ग्राम से संबंधित विस्तृत जानकारी देकर सबको गौ माता की सेवा हेतु उत्प्रेरित किया। अखिल भारतीय नगरीय कार्य प्रमुख माननीय शंकरजी अग्रवाल ने कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया। ❑

स्वावलम्बन योजना के बढ़ते चरण

- शकुन्तला बागड़ी, अध्यक्षा महानगर महिला समिति

कोलकाता महानगर समिति द्वारा प्रारंभ किया गया स्वावलम्बन प्रकल्प सभी के श्रद्धा एवं आकर्षण का केन्द्र बन रहा है। सन् 2012 में प्रान्त की महिलाओं की बैठक में एक वनवासी महिला ने बहुत दु:ख से बताया कि दीदी पढ़ाई के बाद भी हमारे पास गाँव में अर्थोपार्जन का कोई साधन नहीं है। तत्काल मन में विचार आया कि उनके लिए हम कुछ ऐसा कर पाएं ताकि वे स्वावलम्बी बन सकें। प्रान्त संगठन मंत्री माननीय महादेव दा से बात हुई तो उन्होंने वनवासी महिलाओं को सिलाई सिखाने का सुझाव दिया। उनका सुझाव मेरे अन्तर्मन को गहराई से छू गया और तत्काल ही बहनों के प्रशिक्षण की योजना बना ली। कक्षा को लेकर तरह तरह के प्रयोग हुए और अन्तत: आज का व्यवस्थित रुप सामने आया।

साल में 5 या 6 बार उनको बुलाया जाता है। अब तक 500 महिलायें प्रशिक्षण प्राप्त कर चुकी हैं। सीखकर स्वयं सिलाई केन्द्र खोल रही हैं या अपना स्वयं का काम कर रही हैं। सिलाई सीखने की इतनी प्रबल आकांक्षा है उनमें कि शहरी महिलायें जो छ: महीने में सीखती हैं वह सब ये वनवासी बहनें 15 दिन में सीख जाती हैं। अपने गाँव लौटकर थोड़े थोड़े रुपये इकट्ठे करके मशीन खरीदकर, पहले छोटे रुप में काम शुरू करती हैं और फिर पूरे गांव में उनका काम और नाम चलने लगता है। सुंदरवन,चाकदा, बांधवान आदि गाँवों में घर-घर में आपको इस तरह सिलाई करती महिला मिल जाएगी। वे कल्याण आश्रम को सदा धन्यवाद देती हैं कि आज सिलाई प्रशिक्षण प्राप्त कर वे अपने घर में कुछ सुविधाएं जुटा पा रही हैं। अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने के बारे में भी सोच रही हैं क्योंकि आज वे अपने पैरों पर खड़ी हैं। कुल मिलाकर बहनों का कौशल निरन्तर निखार पा रहा है। इस वर्ष उन्हें कपड़े के थैले बनाने का प्रशिक्षण भी दिया गया। प्लास्टिक की थैलियों के सशक्त विकल्प के रूप में इसका सभी ने तहेदिल स्वागत किया। प्रसन्नता की बात है कि कोलकाता के सिलाई केन्द्र से प्रेरित होकर बंगाल के 6 स्थानों में नये सिलाई केन्द्र प्रारंभ हुए हैं। ये स्थान हैं-

केशियारी (पूर्व मेदिनीपुर), गोसाबा, (दक्षिण 24 परगना), राउतोड़ा (बांकुड़ा), बांधवान, कुमारी, (बलरामपुर) अयोध्या पहाड़। सिलाई के साथ-साथ प्रतिदिन योग-व्यायाम एवं प्राणायाम का प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि वे शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ रहें। ❑

लेकटाऊन महिला समिति का राखी मेला

- शकुन्तला अग्रवाल,सह संगठनमंत्री

लेकटाऊन महिला समिति का 26वां तीन दिवसीय राखी मेला 20, 21, 22 जुलाई को गोकुल बैंक्वेट में उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। कुल 38 स्टॉल्स थे। इसके अलावा एक स्टाल कल्याण आश्रम का भी था। इस मेले का उद्घाटन आई.पी.एस. श्री हेमन्त कुमार लोहिया एवं प्रख्यात सर्जन डॉ. प्रदीप निमानी ने किया। तीन दिन में करीब 2000 लोगों का आवागमन हुआ। इस मेले के माध्यम से हम लोगों को अपने कार्य की जानकारी देते हैं और हमे यहाँ से कार्यकर्ता भी मिले हैं। कई ऐसे लोग भी हैं जो गत 10 /12 वर्षों से लगातार हमारे यहाँ स्टाल लगाते आ रहे हैं। कभी-कभी उनको उसमे कोई विशेष लाभ भी नहीं होता है फिर भी वह यह सोचकर वापस आते हैं कि एक अच्छे काम के लिये इस प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है। अत: व्यक्तिगत नफा-नुकसान को छोड़कर भी स्टाल लगायेंगे। ❑

नैपुण्य शिविर का प्रेरक आयोजन

- शैलजा बियानी, सेवापात्र प्रमुख, साल्टलेक समिति

गत 7-8 सितम्बर 2019 को रानीगंज की सीताराम धर्मशाला में कोलकाता-हावड़ा महानगर कार्यकर्ताओं का नैपुण्य शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शन हेतु अखिल भारतीय सह नगरीय कार्य एवं उत्तर क्षेत्र के प्रमुख श्री भगवान सहाय जी, दक्षिण बंग प्रांत के सह संगठन मंत्री श्री उत्तम महतो एवं अखिल भारतीय नगरीय कार्य प्रमुख माननीय श्री शंकर अग्रवाल पूरे समय उपस्थित रहे। 9 विभिन्न सत्रों में कल्याण आश्रम की चुनौतियाँ एवं उपलब्धियाँ, जीवन्त संगठन के मापदण्ड, व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय दायित्व, देशहित के विभिन्न स्वरुप, कार्य में युवाओं की भागीदारी, वनवासी महापुरुषों से संबंधित प्रश्नोत्तरी, प्रेरक घटनाओं आदि के माध्यम से विभिन्न श्रेणी के कार्यकर्ताओं के कार्य आदि विषयों पर गंभीर विचार-विमर्श हुआ। अधिकांश सत्र चर्चात्मक थे ताकि सभी कार्यकर्ताओं का सहभाग हो सके। 7 तारीख रात्रि के मनोरंजन सत्र में देशभक्ति गीतों, कविताओं, नाटक आदि ने कार्यकर्ताओं का भरपूर मनोरंजन किया। कार्यकर्ताओं के भोजन एवं आवास की उत्तम व्यवस्था थी। इस नैपुण्य शिविर की सर्वाधिक उल्लेखनीय उपलब्धि रही-रानीगंज नगर में कल्याण आश्रम के कार्य विस्तार हेतु समिति का निर्माण। **श्री श्रवणजी तोदी** के संयोजकत्व में समिति की घोषणा माननीय शंकरजी अग्रवाल ने की। सह संयोजक का दायित्व **श्री महेश सराफ, श्री विमल सराफ** एवं **श्री सुशील गनेड़ीवाल** को दिया गया। कार्यकारिणी सदस्यों में श्री अशोक मोदी, श्री किशन दारुका, श्री राजेश सराफ, श्री राजीव जैन, श्री जयप्रकाश जाजोदिया, श्री संदीप झुनझुनवाला, श्री रीतेश खेतान, श्री प्रमोद कयाल, श्री नथमल केडिया, श्री ललित खेतान,श्री ललित झुनझुनवाला, श्री ओम बाजोरिया एवं सुशील खंडेलवाल, श्रीमती रजनी दारुका, श्रीमती रश्मि सतनालिका एवं श्रीमती रीना खेतान एवं श्रीमती मंजू गुप्ता का चयन हुआ है। उम्मीद है कि रानीगंज नगर में भी वनवासी सेवा एवं संगठन कार्यों के प्रति भाव जागरण का कार्य होगा एवं रानीगंजवासी इस कार्य के राष्ट्रीय महत्व को समझते हुए अधिकाधिक संख्या में जुड़ेंगे। ❑

बागमुण्डि में युवती चेतना शिविर

बागमुण्डि ब्लॉक में युवतियों के लिए चेतना शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 19 गाँवों से 74 छात्राएं सम्मिलित हुई। इस शिविर में अखिल भारतीय सह-महिला प्रमुख वीणापाणिदास शर्मा एवं दक्षिण बंग प्रांत महिला प्रमुख श्रीमती रंजू सिन्हा ने *वनवासी समाज हिन्दू समाज* का ही अभिन्न अंग है- इस विषय पर छात्राओं का मार्गदर्शन किया। राष्ट्र विरोधी शक्तियों द्वारा चलाए जा रहे लव जेहाद के दुष्परिणामों की भी चर्चा हुई। इस शिविर से प्रेरित होकर 4 छात्राओं ने पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रूप में अपनी सेवाएं देने का मन बनाया है। ध्यातव्य है कि इस शिविर की सारी व्यवस्था छात्राओं ने स्वयं शुल्क देकर की। ❑

भीलों/वनवासियों (हिन्दुओं) के उत्सव

हिन्दुओं के जीवन दर्शन को समझना है तो भीलों के जीवन को निकट से रहकर देखना और समझना होगा। निकट से इसलिए क्योंकि भीलों के प्रति विचित्र प्रकार की धारणायें बनीं हुईं हैं, वे गलत धारणायें तभी टूटेंगीं जब उनके साथ रहा जाये। भीलों (आदिवासियों) को समझने के बाद हिन्दू धर्म को आसानी से समझा जा सकता है। भीलों (आदिवासियों) को समझे बिना हिन्दू धर्म का तत्वज्ञान समझना मुश्किल रहेगा।

हिन्दुओं का मूल स्वरूप क्या है? हिन्दुओं में गीता जैसा विश्व स्तरीय ग्रंथ कैसे लिखा जा सका? हिन्दुओं में राम जैसा महान चरित्र कैसे लोकव्यापी हुआ। इन बहुत से प्रश्नों के उत्तर आज दुनिया भर में खोजे जा रहे हैं। चिंतनशील बौद्धिकजगत में इसी बात पर रिसर्च हो रही है। मेरे द्वारा लिखे निम्नलिखित अनुच्छेदों में आप इन प्रश्नों के उत्तर पा सकते हैं। ध्यान से पढ़ना जरूरी है। विस्तार से नहीं सक्षेप में बात कही है। भूमिका बड़ी है क्योंकि विभ्रम बहुत ज्यादा हैं। मूल बात छोटी किन्तु वही खास है।

दुनिया की सबसे प्राचीन संस्कृति हिन्दू (भील) है। हिन्दुओं की सभी परम्पराओं का मूल भीलों से संबंधित है। हिन्दू दर्शन में हिन्दुओं की संस्कृति को जंगली, वन्य, आरण्य संस्कृति कहा है। जंगली! जंगली!! जंगली!!! कहकर जिन्होंने अभी तक भीलों को पिछड़ा कहा या समझा, वे भी अब विज्ञान की दुहाई देकर जंगली या वनवासियों को असभ्य समझते रहने की झेंप को मिटाने के लिए जंगल (प्रकृति के सानिध्य) में रहने वाले परिवार सबसे उत्तम जीवन होते हैं, समझा रहे हैं।

हिन्दुओं में उत्सव, पर्व, त्योहार आदि मनाये जाते हैं। इन पर्वों, त्योहारों को मनाने की बातें पंचांग में और नाना प्रकार के ग्रंथों में लिखी हुईं हैं। इन ग्रंथों की ये सब बातें आई कहाँ से? भीलों के परिवारों में किसी प्रकार के ग्रंथ आदि साहित्य नहीं हैं और न ही कोई आधुनिक काल के मंदिर या मूर्तियाँ हैं तो भी भीलों में उन्नत समाज की परम्परायें हैं। भीलों (शुद्ध हिन्दुओं) से दूर रहने के कारण हिन्दू समाज में अनेक कमियाँ आ गयीं।

भीलों की एक परंपरा का उल्लेख करना यहाँ पर उचित होगा। आलीराजपुर और झाबुआ ये दोनों जिले माही और नर्मदा के मध्य में बसे हैं। इनकी सभ्यता सिंधु घाटी सभ्यता जैसी पुरानी है। सिन्धु घाटी सभ्यता में किसी विकसित नगर के भग्नावशेषों/खंडहरों से अनुमान लगाया गया है कि तब की सभ्यता महान थी या महान रही होगी। इससे हुआ यह कि पुरातत्ववेत्ताओं ने दिवंगत पूर्वजों की सभ्यता पहचान ली और जीवमान वंशजों की जीवित सभ्यता को उपेक्षित कर दिया गया।

आइये! जानते हैं प्रकृति पूजा क्या होती है? प्रकृति पूजा का मतलब है कि प्रकृति को नष्ट न करते हुए उसके संरक्षण और संवर्धन के संस्कार हर पीढ़ी में उत्पन्न करने की जीवंत व्यवस्था करना। वेदों में शान्तिपाठ या संगठन सूक्तों के माध्यम से यही सब बातें विस्तृत रूप में लिखीं हैं। अर्थात प्रकृति के साथ समरस जीवन जीना, प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का भाव रखना। हिन्दुओं की जीवनशैली में (जिसे पूजा-पद्धति कहते हैं) भी यही सब बातें विकृति आने से पहले दिखाई देती रही हैं।

हिन्दू संस्कृति में अन्न को ब्रह्म कहा है। ब्रह्म के प्रति सर्व प्रथम समर्पण। ब्रह्म (प्रकृति) की पूजा, इसकी शुरुआत समर्पण से होती है। झाबुआ धर्मक्षेत्र में आखातीज (अक्षय-तृतीया) से नये आने वाले वर्ष के काम खेतों की तैयारी से शुरू होते हैं। आखातीज के विषय में बाद में लिखूँगा पर अभी नवई की पूजा के विषय में लिखना समीचीन रहेगा। समय मिला तो बहुत नवई, जातर, चलाउनी, उजैनी, दिवासा, माथा-धवाड़ना, भराड़ी, वासिंगजोधा की पूजा, भिड़्हा (भिड़ा) आदि बहुत सारा लिखने को और बताने को है। नवई की पूजा झाबुआ (आलीराजपुर, झाबुआ) के प्रत्येक गाँव के प्रत्येक घर में अलग अलग तिथियों में होती है। अब हिन्दुओं की संस्कृति की शुरुआत भी यहीं से होती है। क्या है नवई की पूजा? आइए जानते हैं नवई की पूजा के विषय में। बारिश के पानी से जो धान्य खेतों में उगता है, बाद में वह पक जाता है। पके हुए धान्यों में खासकर झाबुआ-धर्मक्षेत्र (झाबुआ,आलीराजपुर) में ककड़ी, मक्के के डोडिया (भुट्टे) सबसे पहले परिपक्व (खाने लायक) हो जाते हैं।

गाँव में नवई की पूजा का दिन निश्चित करके ग्राम-देवता (मंदिर नहीं) एक निश्चित स्थान जो आपको हरेक गाँव में देखने को मिल जायेगा तथा जिन परिवारों को उस तिथि में नवई पूजा करनी होती है, वे परिवार उस स्थान पर एकत्रित हो जाते हैं। ककड़ी, डोडिया, दूध, फल जो भी बरसात के बाद के फल हैं, (शरद ऋतु में) देवस्थान पर जाकर देव को समर्पित करते हैं। यह पूजा गाँव के तड़वी द्वारा होती है। ध्यान रहे वनांचल जातिविहीन समाज है अर्थात पहले से ही समुन्नत समाज। सभी सामाजिक काम 'तड़वी' द्वारा निष्पादित होते हैं। नवई की पूजा करने के बाद ही नये पके फल, फूल, सब्जी का खाने में प्रयोग होता है। छोटे छोटे बच्चे भी नवई की पूजा हुए बिना ककड़ी भी नहीं खाते। यह बात अलग है कि आजादी के बाद पढ़े लिखे लोगों ने ऐसी परम्पराओं को मिटाने के जो प्रयास किये उनके कारण कहीं-कहीं इन परम्पराओं में ह्रास देखने को मिलता है। सामान्यत: यह माना जाता है कि वनांचल में नवई जैसी पूजा किसी पंडे पुरोहित, ब्राह्मणों ने सिखाई है। किन्तु सच यह है कि ब्राह्मण तो इस क्षेत्र में कभी आये ही नहीं। आदिवासियों से पंडित, पुरोहितों ने यह परम्परायें जरूर सीखी हो सकती हैं। राजा भी सघन जंगलों में गये नहीं। अंग्रेजों और मुसलमान शासकों ने भी इन स्थानों को देखा नहीं। ❑

छत्तीसगढ़ में वनवासियों ने दिखाया ग्रामीण इंजीननियरिंग का कमाल

'जहाँ चाह, वहां राह' यह बात तो हम सभी ने अकसर सुनी होगी, लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो इसका अनुसरण करके अपनी मुश्किलों को खुद ही हल कर लेते हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण इलाके आज भी विकास कार्यों से दूर हैं। ऐसे में नारायणपुर के जाटलूर में वनवासियों ने अपने हौसलों के दम पर पत्थरों व लकड़ी के जरिए एक जुगाड़ पुल बनाया है ताकि आने-जाने में उन्हें आसानी हो सके। यह ग्रामीणों की इंजीनियरिंग का शानदार नमूना है। ❑

रक्षाबन्धन पर कल्याण आश्रम की बहनों ने डेढ़ लाख राखियाँ बनाई

प्यारे सैनिक भाइयों के साथ त्यौहार मनाया

- डॉ. रंजना त्रिपाठी, अलीपुर महिला समिति

न जानते हैं, न है रिश्ता खून का
न हुई कभी मुलाकात है।
जिन्दा हम इसी विश्वास से
कि आप सरहद पर तैनात हैं।
धन्यभाग होंगे हमारे
जब यह राखी सजेगी आपकी कलाई पे
यह कलाई जो भारी पड़ जाय
दुश्मन की हर लड़ाई में

यूं तो भारत में भाई-बहनों के बीच प्रेम और कर्तव्य की भूमिका किसी एक दिन की मोहताज नहीं है पर रक्षाबंधन के ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व की वजह से ही यह दिन इतना महत्वपूर्ण बना है। बरसों से चला आ रहा यह त्यौहार आज भी बेहद हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

राखी बांधना सिर्फ भाई-बहन के बीच का कार्यकलाप नहीं रह गया है। राखी देश की रक्षा, पर्यावरण की रक्षा, हितों की रक्षा आदि के लिए भी बांधी जाने लगी है। सैनिकों के बलिदान, त्याग और समर्पण को याद करते हुए अपने प्यार और स्नेह की अभिव्यक्ति के लिए पूर्वांचल कल्याण आश्रम की विभिन्न समितियों की बहनों ने कोलकाता महानगर के विभिन्न सेना - प्रकल्पों में स्वयं उपस्थित होकर जवान भाइयों की कलाई पर राखियाँ बाँधी एवं उनका मुँह मीठा किया।

सेना के विभिन्न प्रकल्पों में से पूर्वी कमान के कमान अस्पताल अलीपुर में पहुँचकर समिति की बहनों ने कमान अस्पताल के सेना अधिकारियों के साथ-साथ अस्पताल में भरती जवान रोगियों को भी राखी बाँधी तथा उनका हौसला बढ़ाया। समिति की बहनों के प्यार और सद्भाव को देखकर सेना के अधिकारी और जवान अभिभूत हो गए। देश और देशवासियों की रक्षा का संकल्प लिया और यह भरोसा दिलाया कि उनके हाथों में देश सुरक्षित है। समिति की बहनों के प्यार और सद्भाव के सम्मान में अलीपुर कमान अस्पताल द्वारा चाय-नाश्ते का भी आयोजन किया। सभी बहनों ने अगले वर्ष पुन: मिलने का संकल्प लेकर प्रस्थान किया। प्रस्तुत है सेना के अन्य प्रकल्पों एवं वनवासी गाँव चिनसुरा रक्षासूत्र बांधने के अनुभव।

एक सुखद अनुभव : विद्या खेमका

न्यू टाऊन के सेक्टर 5 में जब हम बी.एस.एफ. के जवानों को राखी बाँधने वहाँ के आई.जी. हेमन्तजी लोहिया से मिले तो उनका सरल स्वभाव देखकर गद्‌गद् हो उठे। उनसे जब वनवासी समाज की चर्चा हुई तो देखा उनके मन में भी शोषित, पीड़ित वनवासी समाज के प्रति बहुत पीड़ा है। उन्होंने साधन सम्पन्न समाज की उपेक्षा को ही वनवासी की दुरवस्था का कारण माना। वहाँ जवानों को राखी बाँधते समय ऐसा महसूस हुआ कि इस रक्षा के धागे के द्वारा इनको हम राष्ट्र रक्षा की जिम्मेदारी सौंप रहे हैं। आँखें नम हो गई खुशी से। वहाँ एक 22-23 वर्ष के फौजी जवान से मिलकर मन गर्वमिश्रित वेदना से भर गया। उसने बांग्लादेश के बार्डर पर गायों की रक्षा करते हुए अपनी दोनों आँखें एक हाथ एवं पूरे शरीर को घावों से जख्मी कर लिया था। फिर भी

उसके हौसले बुलन्द थे। उसने बताया कि स्वस्थ होकर वह पुनः राष्ट्र रक्षा के कार्य में जुट पड़ूँगा। इस प्रकार 60-65 जवानों एवं घायल फौजियों को रक्षा सूत्र बाँधकर हम सुखद अनुभूति एवं जोश के साथ घर लौटे।

मेरे लिए गर्व का अवसर : चुनचुन सरावगी

फोर्ट विलियम के डलहौजी बैरक में जब हम कल्याण आश्रम की 10 बहनें राखी बाँधने पहुँची तब हमने देखा कि हमारे वीर सैनिक राखी बँधाने पंक्तिबद्ध होकर पहले से खड़े हैं। कल्याण आश्रम की परम्परा के अनुसार सबने मिलकर तीन बार ॐकार की ध्वनि की एवं कल्याण आश्रम के कार्य के बारे में संक्षेप में बहन शशि अग्रवाल ने सबको जानकारी दी। तत्पश्चात सब बहनों ने मिलकर राखी बाँधी एवं उनका मुँह मीठा कराया। फौजी जवानों ने भी हम सबके लिए चाय-नाश्ते की व्यवस्था रखी थी। इसके पश्चात डलहौजी बैरक के दर्शन किए जहाँ अंग्रेजों ने नेताजी को नजरबंद करके रखा था। वे हमें म्यूजियम में भी लेकर गए। एक-एक गैलरी का वर्णन करते हुए दो चार सैनिक हमारे साथ चल रहे थे। बीच-बीच में हमसे पानी के लिए भी पूछ रहे थे। हम सब सैनिकों के अनुशासन एवं देश प्रेम से तो परिचित हैं किन्तु आतिथ्य सचमुच अभिभूत कर गया। मेरे मन में कवि द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी की पंक्तियाँ गूंज रही थी।

उठो धरा के अमर सपूतों
पुनः नया निर्माण करो
जन-जन के जीवन में फिर से
नव स्फूर्ति नव प्राण भरो।। ❑

अनुकरणीय

- तारा महेश्वरी

हमें यह सूचना आप सभी से साझा करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि जैन समाज के लब्धप्रतिष्ठ-व्यक्तित्व, अपने विशाल उदारचित्त के लिए लोकप्रिय **सरदारमल कांकरिया** ने वनवासी बालिकाओं की प्रगति की दीपशिखा को और भी अधिक प्रज्वलित रखने हेतु 25 सिलाई मशीन एवं 5 कम्प्यूटर भेंट किया। कल्याण आश्रम आभार व्यक्त करता है।

वंदन अभिनंदन करे, धरा और आकाश
दानवीरता आपकी, जग में है विख्यात। ❑

भारत माँ की गोदी दान-वीरों से खाली नहीं है। इसी कड़ी में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निष्ठावान, कर्तव्यपरायण, समर्पित कार्यकर्ता **श्रीयुत लखन जी गुप्ता**, आसनसोल (आयु 90 वर्ष) ने दिनांक 7-8 सितंबर 2019 को रानीगंज में लगे हुए नैपुण्य शिविर के समापन सत्र में पधारकर वनवासी भाई-बहनों के विकास में सहयोग करते हुए अपने माता-पिता और धर्मपत्नी की स्मृति में 1 लाख रुपए का चेक भेंट किया एवं कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं के प्रति शुभेच्छा व्यक्त की।

पवित्र जिसकी कामना, उसका अतुल्य मोल है
अर्पण हुए जो प्रेम से, वह दान भी अनमोल है ।

कल्याण आश्रम परिवार श्रद्धानत है। ❑

वनवासियों को राखी बांधने का सुखद अनुभव

- अरुणा शाह, संयोजिका उजास समिति

रक्षाबन्धन धागों का प्यार से संवारा हुआ त्योहार... बहना ने भाई की कलाई पर प्यार बाँधा है, ये तो हम सदा से सुनते देखते आ रहे हैं, पर इस बार हम लोगों को चिनसुरा जाने का अवसर मिला। जहाँ पर एक ग्राम में हमारे कार्यकर्ता (पूर्णकालीन) श्री राम मुरमुरु जी के सान्निध्य में हम लोगों ने रक्षाबन्धन के इस पावन त्यौहार को एक नये रूप में मनाया।

सुदूर गाँव में एक छोटे से अर्धनिर्मित हाल में करीब 70 बच्चों और महिलाओं के साथ हमने यह प्यार भरा त्यौहार मनाया।

सभी को प्रेम पूर्वक टीका करके उनको प्यार के धागे बाँधे, उन लोगों की आत्मीयता देखते ही बनती थी। वे एकदम भावविभोर मुद्रा में हम लोगों के साथ बैठे थे।

उनके आतिथ्य का वर्णन शब्दों में करना इतना आसान नहीं है। कई बार जीवन में ऐसे क्षण आते हैं जब उसकी अनुभूति एक प्यार भरी सिहरन दे जाती है। बात ऐसे हुई कि जब हम सब राखी बाँध रहे थे तो उनमें से चार छोटे मासूम बच्चे उठकर आये और हम चार महिलाएं जो वहाँ गयी थी उनको एक पेन लाकर गिफ्ट में दिया। उनका सम्मान करने का यह अनूठा तरीका दिल को छू गया। इतने साधारण से भोले से व्यक्तित्व से भी प्यार की गागर छलक-छलक जा रही थी। और तो और राखी बांधने के पश्चात प्रत्येक बच्चा और महिलएं सब पैर पड़ने लगे... शायद संस्कारों से भरे हुए थे हमारे प्यारे वनवासी। इसके पश्चात हमें अपनी कुटिया में भी लेकर गये जहाँ हमारे लिए जलपान की भी व्यवस्था कर रखी थी। खाने से पहले तसले में हाथ धुलाना और खाने के पश्चात भी हाथ धुलाना मन को अत्यधिक सुकून दे गया।

हमें लगा शायद वनवासी भाइयों के लिए हम जो करते हैं उससे भी कहीं ऊपर उनकी निष्पक्ष भावना से आदर सत्कार करने की प्रक्रिया है।

हम सबने मिलकर हर्ष के साथ त्यौहार मनाया। राखी बाँधते समय हमारी दीदी शकुन्तला जी बागड़ी की तस्वीर सामने आई कि वे क्यों इतनी मेहनत करके हमलोगों से ऐसी प्यारी-प्यारी राखी बनाने का आग्रह करती हैं। स्वयं के बनाए हुए धागों को बाँधने का कुछ अलग ही महत्व था। चिनसुरा के ग्राम में पूर्वांचल कल्याण आश्रम की महिला कार्यकर्ता श्रीमती चाचमनी मुरमुरा ने हमलोगों को भी प्यार के धागे बाँधे और 'आबार आस्बे' कहकर के हमलोगों को बहुत ही भावभीनी विदाई दी।

चिनसुरा ग्राम में जाने का कार्यक्रम शशि मोदी के सान्निध्य में बना था। साथ में सुमन टांटिया, बीना शाह और मैं गयी थी। यह कार्यक्रम हम सभी को आजीवन स्मरण रहेगा।

उल्लेखनीय है कि कल्याण आश्रम कोलकाता-हावड़ा महानगर की प्रत्येक समिति की बहनों ने अत्यंत प्रेम पूर्वक अपने वनवासी भाइयों के लिए राखियाँ बनाई एवं देश भर में कल्याण आश्रम के अधिकांश प्रकल्प स्थानों में ये राखियाँ भेजी गई। सुदूर अंदमान के द्वीप पर भी कार्यकर्ता, बहनों द्वारा भेजी राखी प्राप्त कर समरसता और एकात्मता का अनुभव कर रहे थे। ❑

प्रेरक प्रसंग

चंद्रयान-2: मिशन में झारखंड का 'लाल' सोहन कुमार यादव भी शामिल

चंद्रयान-2 के अभियान में शामिल वैज्ञानिकों में झारखंड के तोरपा (खूंटी) के तपकारा गांव का सोहन कुमार यादव भी है। फोन पर हुई बातचीत में उसने कहा कि मिशन का हिस्सा बनना मेरे लिए गर्व की बात है। सोहन ने जुलाई 2016 में इसरो में योगदान दिया था। वे लिक्विड प्रोपल्सन सिस्टम सेंटर बेंगलुरु में कार्यरत हैं। सोहन के पिता शिवशंकर यादव ट्रक ड्राइवर हैं तथा मां देवकी देवी गृहिणी हैं। सोहन की प्रारंभिक शिक्षा वनवासी विकास समिति द्वारा संचालित श्रीहरि सरस्वती शिशु मंदिर तपकरा (वनवासी कल्याण केन्द्र से संबंधित) में हुई। नवोदय विद्यालय से मैट्रिक करने के बाद डीएवी बरियातू से इंटर किया। इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ स्पेस साइंस एंड टेक्नोलॉजी, तिरूअनंतपुरम से उन्होंने एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में बी.टेक की डिग्री हासिल की। यहीं से उसका चयन इसरो के लिए हुआ। चंद्रयान-2 के अभियान में बेटे सोहन के शामिल होने पर मां देवकी देवी व उसकी बहन धीरा खुशी से फूले नहीं समा रही हैं। वे कहती हैं, सोहन पर हम सबको नाज है। वह सफलता की ऊँचाइयों पर पहुंचे तथा अपने जिले व देश का नाम रोशन करे। देवकी देवी बताती हैं कि सोहन पूर्व राष्ट्रपति स्व. अब्दुल कलाम आजाद को अपना आदर्श मानता है। ❑

ठमाताई पवार हुई सम्मानित

वनवासी कल्याण आश्रम महाराष्ट्र की वरिष्ठ कार्याकर्ता ठमाताई पवार को पूना के ज्योत्स्ना देवी दर्डा कार्य गौरव पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। 23 जुलाई को पूना में आयोजित कार्यक्रम में पुरस्कार प्राप्त करने पर ठमाताई ने बताया कि यह मेरा नहीं परन्तु वनवासी कल्याण आश्रम के हजारों कार्यकर्ताओं के नि:स्वार्थ प्रयासों का सम्मान है जिसके चलते जनजाति समाज का विकास हो रहा है। इसके पूर्व भी महाराष्ट्र की कई सामाजिक संस्थाओं ने ठमाताई का सम्मान किया है और राष्ट्रीय स्तर पर उन्हें स्त्री शक्ति पुरस्कार भी मिला है। कातकरी परिवार की ठमाताई पिछले तीन दशकों से अधिक समय से जनजाति समाज के उत्थान हेतु सेवाभावना के साथ कार्य कर रही हैं। ❑

देश के लिए गौरव का क्षण

इसरो के श्रीहरिकोटा अंतरिक्ष केन्द्र से चंद्रयान-2 ने 22 जुलाई 2019 को चाँद के रहस्यों पर रिसर्च हेतु उड़ान भरी। अब तक अमरीका, चीन और रूस ये उपलब्धि हासिल कर चुके हैं। अंतरिक्ष के क्षेत्र में इस सफलता के लिए हमारे देश के वैज्ञानिकों की दृढ़ संकल्प शक्ति और मेहनत का महत्वपूर्ण योगदान है। उनका शोध रंग लाया है। हम देशवासियों के लिए यह भी गौरव का क्षण है। ❑

प्रसिद्ध उद्योगपति बसन्त कुमार बिड़ला नहीं रहे

सुप्रसिद्ध उद्योगपति, बिड़ला परिवार के सबसे वरिष्ठ सदस्य और कुमार मंगलम बिड़ला के दादाजी बसंत कुमार बिड़ला का 98 साल की उम्र में मुंबई में निधन हो गया। बसंत बिड़ला ने 15 साल की उम्र में व्यापार की कमान संभाल ली थी। वे उद्योगपति घनश्यामदास बिड़ला के सबसे छोटे बेटे थे। सबसे पहले वो केसोराम इंडस्ट्रीज के चेयरमैन बने थे। यहीं से उन्होंने कई व्यापार में अपना हाथ अजमाया और समूह को आगे ले जाने में सफल रहे।

1995 में कुमार मंगलम बिड़ला के पिताजी आदित्य विक्रम बिड़ला का निधन हो गया था। वो बसंत कुमार बिड़ला के इकलौते पुत्र थे। उनके परिवार में दो बेटियां जयश्री मोहता और मंजूश्री खेतान हैं। उनके निधन से देश ने दूरदृष्टि सम्पन्न उद्योगपति एवं लोकोपपारक खो दिया। उद्योगपति उन्हें भारतीय उद्यमी जगत के संस्थापक पितामह के रूप में जानते हैं। न केवल उद्योग जगत अपितु शैक्षणिक एवं आध्यात्मिक कार्यों में भी अमूल्य योगदान दिया। देश के हर कोने में उनके शिक्षा प्रतिष्ठान एवं मन्दिर हैं। कला और संस्कृति के क्षेत्र में भी उनका योगदान अतुलनीय था। जब कोलकाता में कोई अच्छा ऑडिटोरियम नहीं था तब बी.के.बाबू की प्रेरणा से कलामन्दिर बना। उद्योग जगत में उन्होंने बंगाल को बुलंदी पर पहुँचाया। पूर्वांचल कल्याण आश्रम एवं वनवासी सेवाकार्यों के प्रति उनका सदैव सद्भाव रहा। संगठन के 32वें वार्षिकोत्सव (12 दिसम्बर 2011) में विशिष्ट अतिथि के रूप में सपत्नीक पधारकर उन्होंने न सिर्फ कार्यक्रम की शोभा और गरिमा बढ़ाई अपितु खुले मन से 20 लाख का अनुदान देकर इस कार्य को विस्तारित करने की अपनी मंशा भी जाहिर की। उन्होंने अपने वक्तव्य में कल्याण आश्रम के सेवाकार्यों की सराहना करते हुए कहा कि आर्थिक व सामाजिक विकास के साथ समाज में एकता व राष्ट्रीय अखण्डता के लिए वनवासी क्षेत्रों में संस्था के कार्यकर्ता सेवाभाव से काम कर रहे हैं। कल्याण आश्रम परिवार दिवंगत आत्मा के प्रति अश्रुपूरित श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता है। ❑

वार्षिकोत्सव में सपत्नीक उपस्थिति

रामगुलाम द्विवेदी का देहावसान

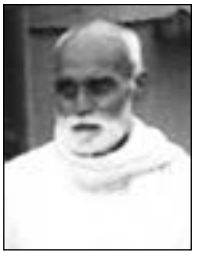

वनवासी कल्याण आश्रम की उत्तरपूर्व इकाई सेवा समर्पण संस्थान के प्रथम मंत्री श्रीरामगुलाम द्विवेदी जी का निधन 92 वर्ष की उम्र में गत 14 अगस्त 2019 को प्रात: 4:30 बजे अपने निवास सुल्तानपुर में हुआ। संगठन के विभिन्न दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वाह किया। द्विवेदीजी माननीय अवधबिहारी जी के सम्पर्क में आकर संघ के स्वयंसेवक बनें एवं लम्बे समय तक सुल्तानपुर जिले के जिलाकार्यवाह रहे। दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए परमात्मा से प्रार्थना है। ❑

शोक संवाद

पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज का निधन

ओजस्वी वक्ता देश की पहली विदेश मंत्री सुषमा स्वराज का गत मंगलवार, 6 जुलाई 2019 को रात्रि 11 बजे निधन हो गया। खास बात यह है कि निधन से कुछ घंटे पहले ही रात 7:23 बजे उन्होंने अनुच्छेद 370 और जम्मू कश्मीर के बंटवारे पर यह ट्वीट किया था- **''प्रधानमंत्री जी, आपका अभिनंदन, मैं अपने जीवन में इस दिन को देखने की प्रतीक्षा कर रही थी''।**

माथे पर बड़ी सी लाल बिंदिया, सिंदूर से भरी माँग और ममत्व से दमकता हुआ मुस्कुराता चेहरा- भारतीय जनता पार्टी की वरिष्ठ नेता और भारत की पूर्व विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज की यह मनोहारी छवि प्रत्येक देशवासी के मन-मस्तिष्क में हमेशा रहेगी। अपनी सुसंस्कारित, शुचितापूर्ण, स्पष्ट और कर्मनिष्ठ राजनीति के दम पर जिन्होंने अपने विरोधियों के दिलों पर भी राज किया, ऐसी लोकप्रिय नेत्री श्रीमती सुषमाजी का देहावसान भारत के राजनैतिक जगत की अपूरणीय क्षति है।

संसद की एक सशक्त आवाज के रूप में उनके अकाट्य तर्क सदैव गूंजते रहेंगे। अपनी संस्कृति को अंतर्मन की गहराईयों में जीने वाली, भारतमाता की लाड़ली बेटी श्रीमती सुषमा स्वराज के निधन का समाचार एक आघात है। कल्याण आश्रम परिवार लोकतंत्र की महानायिका को सजल श्रद्धाञ्जलि समर्पित करता है। ❑

पू.स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि जी ब्रह्मलीन

भारत माता मन्दिर के संस्थापक महामंडलेश्वर स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि जी का गत 25 जून को 87 वर्ष की आयु में देवलोक गमन हो गया। 26 वर्ष की आयु में भानपुरा पीठ के शंकराचार्य बनने वाले स्वामी जी सादगी और सरलता की प्रतिमूर्ति थे। भारतीय धर्मजगत के वे सशक्त स्तंभ थे। उनका पवित्र, स्नेहमय, सेवापरायण तथा समर्पित जीवन, समाज-जीवन की पवित्रता व संतुलन का आधार रहा। उनकी पवित्र व प्रेरक स्मृति को हम सबका प्रणाम एवं भावभीनी श्रद्धांजलि।❑

अरुण जेटली पंचतत्व में विलीन

पूर्व वित्तमंत्री अरुण जेटली का शनिवार 24 अगस्त 2019 को एम्स में 66 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। अपने जीवन काल में कई मंत्रालयों की जिम्मेदारी संभाली। भारत के आर्थिक विकास, हमारी रक्षा क्षमता को मजबूत करने, लोगों के अनुकूल कानून बनाने और अन्य देशों के साथ कारोबार बढ़ाने में योगदान दिया। वे उच्चकोटि विधि विशेषज्ञ के साथ ही एक उत्कृष्ट राजनेता थे। वे देशहित से जुड़े मुद्दे पर विचारों की स्पष्ट अभिव्यक्ति के कारण पहचाने जाते थे। वे कठिन से कठिन कार्य को शान्ति, धैर्य और गहरी समझदारी के साथ पूरा करने का अदभुत सामर्थ्य रखते थे। कल्याण आश्रम परिवार उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता है। ❑

बोधकथा.....

वास्तविक सेवा

एक संत ने एक विश्व-विद्यालय आरंभ किया। इस विद्यालय का प्रमुख उद्देश्य था ऐसे संस्कारी युवक-युवतियों का निर्माण, जो समाज के विकास में सहभागी बन सकें। एक दिन उन्होंने अपने विद्यालय में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया। जिसका विषय था- 'जीवों पर दया एवं प्राणिमात्र की सेवा'। निर्धारित तिथि को तयशुदा वक्त पर विद्यालय के कॉन्फ्रेंस हॉल में प्रतियोगिता आरंभ हुई। किसी छात्र ने सेवा के लिए संसाधनों की महत्ता पर बल देते हुए कहा कि हम दूसरों की सेवा तभी कर सकते हैं जब हमारे पास उसके लिए पर्याप्त संसाधन हों। वहीं कुछ छात्रों की यह भी राय थी कि सेवा के लिए संसाधन नहीं, भावना का होना जरूरी है। इस तरह तमाम प्रतिभागियों ने सेवा के विषय में शानदार भाषण दिए। आखिर में जब पुरस्कार देने का समय आया तो संत ने एक ऐसे विद्यार्थी को चुना जो मंच पर बोलने के लिए ही नहीं आया था। यह देखकर अन्य विद्यार्थियों में रोष के स्वर उठने लगे। संत ने सबको शांत कराते हुए बोले, 'आप सबको शिकायत है कि मैने ऐसे विद्यार्थी को क्यों चुना, जो प्रतियोगिता में सम्मिलित ही नहीं हुआ था।' दरअसल, मैं जानना चाहता था कि हमारे विद्यार्थियों में कौन सेवाभाव को सबसे बेहतर ढंग से समझता है। इसीलिए मैंने प्रतियोगिता स्थल के द्वार पर एक घायल बिल्ली को रख दिया था। आप सब उसी द्वार से अंदर आए, पर किसी ने भी उस बिल्ली की ओर आंख उठाकर नहीं देखा। यह अकेला प्रतिभागी था, जिसने वहां रुक कर उसका उपचार किया। सेवा बहस का विषय नहीं, जीवन जीने की कला है। जो अपने आचरण से शिक्षा देने का साहस न रखता हो, उसके वक्तव्य कितने भी प्रभावी क्यों न हों, वह पुरस्कार पाने के योग्य नहीं है। ❑

कविता.....

आज तिरंगा झूम रहा है

आज तिरंगा झूम रहा है, देखो कितनी शान से।
नव यौवन में मधुरस आया, आन-मान सम्मान से।

यह भारत की तरुण प्रभा है, आज झूमती मस्ती में।
जिधर भी अपना रुख कर दे, सोना बन जाए मिट्टी में।
यह भारत का अरुणोदय है, जड़ पाषाण विटप जन सब।
अध्यात्म से भौतिकवाद तक, है उल्लास मधुर कल-कल।

आज लिखेंगे पुन: सृष्टि का, एक नया इतिहास रे।
यह आशा का प्रबल पुंज है, जब सभी विश्व सो जाएगा।
भारत माँ के आँचल में फिर, नया दीप जल जाएगा।
फिर से देगा ज्यों विपुंज, भारत का हर लाल रे।

अपने देश का प्यारा गौरव, भारत देश महान है।
युग-युग को संदेश दे रहा, भारत का इतिहास है।
यह पावन घर है धर्मों का, गंगा का मैदान है।
भारत के हर जन मानव की, आन-बान औ, शान है।

सागर तक फैला है यह, शीर्ष मुकुट हिमराज है।
प्रकृति की सुन्दर रानी का, संरक्षक यह सरताज है।
भाषाओं का सुन्दर मेला, विविध रंग पहचान है।
पूरब-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण, मेरा देश महान है। ❑

◆ आगामी कार्यक्रम ◆

पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता-हावड़ा महानगर का 40वाँ वार्षिकोत्सव रविवार, 15 दिसम्बर 2019 को स्थानीय कलामन्दिर सभागृह में आयोजित होगा।

रक्षाबन्धन उत्सव की झलकियाँ

वीर जवानों की कलाई पर सजी बहनों की राखियाँ

अस्वस्थ जवानों के मन को स्वस्थ करती बहनों की राखियाँ

कमान अस्पताल का परिसर सजा राखियों से

तमन्ना हमारी, उठो जल्दी स्वस्थ हो

लाए हैं प्यार के धागों को, सजा देंगे हर मन को

आप हो शीघ्र स्वस्थ, तभी देश होगा उन्नत

इस बंधन में भारत माँ की रक्षा का दायित्व,
उन्नत स्वाभिमान कर पाता, दुनिया का नेतृत्व।

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com

Printed Matter

Book - Post